कैम्ब्रिज का मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त
(THE CAMBRIDGE QUANTITY THEORY OF MONEY)
अथवा
मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त : नकद शेष दृष्टिकोण
(QUANTITY THEORY OF MONEY : CASH BALANCE APPROACH)

नकद शेष समीकरण का प्रतिपादन कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्रियों; जैसे—**मार्शल, पीगू, कीन्स, रॉबर्ट्सन** ने किया। इसलिए इसे **कैम्ब्रिज समीकरण** भी कहा जाता है।

प्रो. इरविंग फिशर के मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त की इंग्लैण्ड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्रियों ने तीव्र आलोचनाएँ कीं। उन्होंने बताया कि फिशर ने बैंकों में लोगों के द्वारा रखे जाने वाले नकद शेष (Cash Balance) और बैंकों द्वारा किये जाने वाले निक्षेपों को कोई महत्व नहीं दिया है। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्रियों का मत है कि मुद्रा के मूल्य का निर्धारण मुद्रा का परिमाण नहीं करता वरन् कुल मुद्राओं में से मुद्रा की केवल वह मात्रा ही मुद्रा के मूल्य को निर्धारित करती है जिसे लोग नकद रूप में संचित करते हैं। इसीलिए उनके विचार को 'नकद संचयन दृष्टिकोण' (Cash Balance Approach) कहते हैं।

यह सिद्धान्त मुद्रा की पूर्ति की तुलना में मुद्रा की माँग को अधिक महत्व देता है। इसलिए इस सिद्धान्त को **मुद्रा की माँग का सिद्धान्त** (Demand Theory of Money) भी कहा जाता है।

सिद्धान्त के आधारभूत तत्व (Main Elements of Theory)

इस सिद्धान्त की आधारभूत बातें निम्नलिखित हैं :

(1) **मुद्रा की पूर्ति** (Supply of Money)—मुद्रा की पूर्ति एक निश्चित समय-बिन्दु (Point of Time) पर जनता के पास उपलब्ध नोटों, सिक्कों तथा बैंकों में माँग का जोड़ है अर्थात्

मुद्रा की पूर्ति = नोट + सिक्के + माँग जमा

कैम्ब्रिज समीकरण के अनुसार मुद्रा की पूर्ति का सम्बन्ध **समय के बिन्दु** (Point of Time) से है, जबकि फिशर के समीकरण के अनुसार मुद्रा पूर्ति का सम्बन्ध **समय की अवधि** (Period of Time) से होता है। समय की अवधि में मुद्रा की पूर्ति पर **चलन गति** (Velocity) का प्रभाव पड़ता है परन्तु समय के बिन्दु पर **चलन गति** का प्रभाव नहीं पड़ता।

(2) **मुद्रा की माँग** (Demand for Money)—कैम्ब्रिज दृष्टिकोण में मुद्रा की माँग मुद्रा को **नकद शेष** अर्थात् नकदी के रूप में रखने के लिए की जाती है, जबकि **फिशर** के अनुसार मुद्रा की माँग विनिमय के माध्यम के रूप में की जाती है। इस प्रकार कैम्ब्रिज दृष्टिकोण में मुद्रा केवल विनिमय के माध्यम का कार्य ही नहीं करती बल्कि मूल्य के संचय का भी कार्य करती है। अतः लोग नकद कोषों के रूप में मूल्य का संचय करते हैं जिसका प्रयोग वे अपनी सुविधा अनुसार विनिमय के माध्यम के रूप में कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार एक अर्थव्यवस्था में सभी लोग अपनी वास्तविक आय का जितना भाग नकद रूप में रखना चाहते हैं, उसे ही मुद्रा की माँग कहा जाता है।

(3) **मुद्रा की माँग में वृद्धि व कमी का अर्थ** (Implication of Increase and Decrease in Demand)—इस सिद्धान्त के अनुसार यदि मुद्रा की पूर्ति स्थिर रहती है तो :

(i) जब मुद्रा की माँग की जाती है (नकद कोष के रूप में रखने के लिए), तब इसका आशय यह होता है कि वस्तुओं, सेवाओं को नहीं माँगा जा रहा है।

(ii) यदि समाज में **मुद्रा की माँग बढ़ जाती है** तो यह अर्थ हुआ कि समाज मुद्रा को नकद कोष के रूप में रखकर मुद्रा को रोके रहता है, सेवाओं पर व्यय कम कर देता है। इस प्रकार मुद्रा की माँग में वृद्धि होने से आशय यह होता है कि समाज में वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च कम हो जाते हैं तो उनका मूल्य गिर जाता है अर्थात् मुद्रा का मूल्य बढ़ जाता है।

(iii) इसके विपरीत, जब **मुद्रा की माँग कम हो जाती** है तो इसका आशय यह होता है कि समाज के वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च अधिक हो गये हैं और जब वस्तुओं पर खर्च हो जाते हैं तो उनका मूल्य बढ़ जाता है अर्थात् मुद्रा का मूल्य गिर जाता है।

(iv) इस प्रकार **मुद्रा की माँग में वृद्धि** का अर्थ है **कम खर्च → वस्तुओं का कम मूल्य → मुद्रा के मूल्य में वृद्धि**।

(v) **मुद्रा की माँग में कमी** का अर्थ है—**अधिक खर्च → वस्तुओं का अधिक मूल्य → मुद्रा का कम मूल्य**। अतः मुद्रा की माँग व मुद्रा के मूल्य में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है।

विभिन्न नकद शेष समीकरण
(DIFFERENT CASH BALANCE EQUATIONS)

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने मुद्रा के मूल्य निर्धारण से सम्बन्धित नकद शेष समीकरणों का प्रतिपादन निम्नलिखित रूप में किया है :

(1) **मार्शल का समीकरण** (Marshall's Equation)—मार्शल के अनुसार किसी भी देश में व्यक्ति अपनी कुल वार्षिक आय तथा सम्पत्ति का कुछ भाग नकद रूप में अपने पास रखते हैं किन्तु मार्शल के अनुयायियों ने सम्पत्ति भाग को महत्वहीन माना। अतः मार्शल के समीकरण के अनुसार **मुद्रा की माँग कुल माँग का फलन** है। डॉ. मार्शल ने मुद्रा के मूल्य से सम्बन्धित निम्नलिखित समीकरण दिया है :

$$M = KY$$

चूँकि मौद्रिक आय (Y), कुल उत्पादन (O) तथा कीमत स्तर (P) का गुणनफल होता है, इसलिए :

$$Y = P \times O$$

$$M = K \times P \times O \quad \text{or} \quad P = \frac{M}{KO}$$

मान लीजिए, $K = 1/5$, $O = 1{,}500$ इकाइयाँ तथा $M = 3{,}000$ रुपये है तो उत्पादन की एक इकाई का मूल्य निम्नलिखित होगा :

$$P = \frac{M}{KO} = \frac{3{,}000}{1/5 \times (1{,}500)} = \frac{3{,}000}{300} = 10 \text{ रुपये}$$

मार्शल की विचारधारा में इस बात पर अधिक बल दिया गया है कि यदि मुद्रा की मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं होते तो भी K की मात्रा में परिवर्तन होने पर कीमत-स्तर में महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। मान लीजिए, K का मूल्य 1/5 से बढ़कर 1/3 हो जाता है तो उत्पादन का प्रति इकाई मूल्य घट जायेगा :

$$P = \frac{M}{KO} = \frac{3{,}000}{1/3 \times (1{,}500)} = \frac{3{,}000}{500} = 6 \text{ रुपये}$$

स्पष्ट है कि उपर्युक्त समीकरण में M की अपेक्षा K का प्रभाव कीमत-स्तर पर अधिक पड़ता है।

Scanned with CamScanner